11

फिट् स्वर

इस पाठ में फिट् सूत्रों की आलोचना करेगें। फिट् यह संज्ञावाचक पद है। और यह संज्ञा महर्षि पाणिनि के पूर्वकाल से ही चली आ रही है। ये सूत्र फिषम् अर्थात् प्रातिपदिक के आश्रित ही रहते हैं और इन फिट् सूत्रों के द्वारा प्रधानता से शब्दों के स्वर विधान का नियम है। किस शब्द का कब किस अर्थ में कहाँ पर कौन सा स्वर हो, इन सभी की विस्तार से इन सूत्रों में आलोचना की है। अत: इस पाठ से आप सभी किस शब्द का कब कहाँ पर क्या स्वर होता है, इस विषय में विस्तार से जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- लोक और वेद में शब्दों की स्वर व्यवस्था को जान पाने में;
- फिट् सूत्रों के विषय में जानकारी प्राप्त कर पाने में;
- अपाणिनीय फिट्सूत्रों को भी कैसे प्रमाण रूप से स्वीकार किया गया है, इस विषय में जानकारी प्राप्त कर पाने में;
- विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न शब्दों के आद्युदात्त के विषय में अन्तोदात्त के विषय में और सभी को उदात्त होने के विषय में अधिकता से ज्ञान प्राप्त कर पाने में;
- सूत्रों का अर्थ निर्णय कर पाने में;
- सूत्रों की व्याख्या कर पाने में; और
- अनुवृत्ति आदि के विषय में जान पाने में।

फिट् स्वर

11.1 फिषोऽन्त उदात्तः

सूत्र का अर्थ- प्रातिपदिक फिट् हो। उसका अन्त उदात्त हो।

सूत्र का अवतरण- फिट्-रूप प्रातिपदिक के अन्त्य का उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इससे फिष का अथवा प्रातिपदिक के अन्त को उदात्त स्वर करने का विधान है। इस सूत्र में फिषः अन्तः उदात्तः ये पदच्छेद है। तीन पद वाले इस सूत्र में फिषः यह षष्ठी एकवचनान्त पद है, अन्तः यह प्रथमा एकवचनान्त पद है, उदात्तः यह भी प्रथमा एकवचनान्त पद है। और यहाँ पद का अन्वय इस प्रकार है - फिषः अन्तः उदात्तः इति। और यह सूत्र का अर्थ है - फिष का अथवा प्रातिपदिक के अन्त्य का उदात्त हो।

उदाहरण- उच्चैः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- उच्चैः इस पद को पाणिनीय सूत्रों के द्वारा प्रातिपदिक संज्ञा नहीं की है, अपितु पूर्व आचार्यों के द्वारा प्रातिपदिक कहा गया है। अतः उस फिष का अथवा प्रातिपदिक का अन्त्य ऐकार प्रकृत सूत्र से उदात्त होता है।

विशेष- फिट्- संज्ञा पाणिनि के द्वारा नहीं की गई है। अपितु अनेक वर्षों पहले ही प्राचीन आचार्यों के द्वारा इस संज्ञा का विधान किया है। इसलिए आचार्य वासुदेव दीक्षित के द्वारा कहा गया है - 'फिडिति पूर्वाचार्यप्रसिद्ध्या प्रातिपदिकमुच्यते'। ये सूत्र भी यद्यपि अपाणिनीय है, फिर भी भाष्य प्रमाण से ये सूत्र महर्षि पाणिनि के द्वारा स्वीकार किया है ऐसा जाना जाता है। वैसे ही भाष्य आदि में 'आद्युदात्तश्च' इत्यादि सूत्रों में प्रकृति से अन्तोदात्त होने का विधान है। और ये अन्तोदात्त आदि स्वर व्यवस्था फिट् सूत्रों के विना सम्भव नहीं है। अतः इन सूत्रों के अपाणिनीय होने पर भी पाणिनीय प्रमाण के द्वारा इनको आश्रित किया जाता है।

11.2 छन्दसि च।

सूत्र का अर्थ- छन्दस् में दक्षिण का आदि और अन्त उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण- छन्द में दक्षिण शब्द के आदि और अन्त के स्थान में उदात्त का विधान -.

सूत्र की व्याख्या- यह विधि सूत्र है। यहाँ छन्दसि यह विषय सप्तम्यन्त पद है, च यह अव्यय है। इस सूत्र से दक्षिण शब्द के अन्त और आदि में उदात्त होने का नियम किया है। इस सूत्र में 'दक्षिणस्य साधौ' इस सूत्र से दक्षिणस्य यह षष्ठी एकवचनान्त पद है, 'स्वाङ्गाख्यायामादिर्वा' इस सूत्र से आदिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की, 'फिषोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से अन्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद, उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आती है। उससे

टिप्पणियाँ

यहाँ पद का अन्वय है - छन्दसि दक्षिणस्य आदिः अन्तः उदात्तः इति। यहाँ दक्षिण शब्द से दक्षिण शब्द का अर्थ ग्रहण नहीं किया है, अपितु दक्षिण इस शब्द स्वरूप का ही ग्रहण किया है। और उससे सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है - छन्दसि विषय में दक्षिण शब्द का आदि और अन्त उदात्त होता है।

उदाहरण- दक्षिणः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- दक्षिणः यह वैदिक प्रयोग है। अतः प्रकृत सूत्र से उस दक्षिण शब्द के अन्त अकार का और आदि अकार को उदात्त करने का विधान है।

11.3 घृतादीनां च

सूत्र का अर्थ- घृतादि शब्दों का अन्तिम स्वर उदात्त हो।

सूत्र का अवतरण- घृतादि शब्दों के अन्त्य स्वर के स्थान में उदात्त स्वर के विधान के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य के द्वारा की गई है।

सूत्र की व्याख्या- यह सूत्र विधायक है। इस सूत्र से घृतादि शब्दों के अन्त्य स्वर के स्थान में उदात्त स्वर का विधान होता है। यहाँ दो पद हैं। और वहाँ घृतादीनाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त पद है, च यह अव्यय पद है। इस सूत्र में 'अङ्गुष्ठोदकवकवशानां छन्दस्यन्तः' इस सूत्र से अन्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की, फिषोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः इस विधेय स्वर बोधक पद की यहाँ अनुवृति आती है। यहाँ घृतादीनाम् इस विशेषणपद सामर्थ्य से शब्दानाम् इस विशेष्य बोध क पद का आक्षेप किया है। उससे यहाँ पद का अन्वय होता है - घृतादीनां शब्दानां च उदात्तः इति। और यहाँ सूत्र का अर्थ होता है - घृतादि शब्दों का अन्त्य स्वर उदात्त होता है।

उदाहरण- घृतं मिमिक्षे।

सूत्र अर्थ का समन्वय- घृतं मिमिक्षे इस उदाहरण में घृतम् इस पद के अन्त्य अकार उदात्त है। यहाँ प्रकृत सूत्र से ही घृत शब्द के अन्त्य अकार को उदात्त होने का विधान किया है।

इसी प्रकार अन्य जगह भी प्रकृत सूत्र से घृतादि शब्दों के अन्त्य स्वर को उदात्त किया है। यहाँ यह घृतादिगण ही आकृतिगण है।

11.4 ज्येष्ठकनिष्ठयोर्वयसि

सूत्र का अर्थ- अवस्था अर्थ में ज्येष्ठ कनिष्ठ शब्दों को अन्त उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण- अवस्था अर्थ में ज्येष्ठ कनिष्ठ शब्दों के अन्त्य स्वर को उदात्त करने के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य द्वारा की गई है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधि सूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। ज्येष्ठकनिष्ठयोः वयसि ये यहाँ पदच्छेद है। और इस प्रकार यहाँ ज्येष्ठ कनिष्ठयोः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद है, वयसि

यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। फिषोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से यहाँ अन्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद, और उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति आती है। उससे यहाँ सूत्र के पदों का अन्वय होता है - वयसि ज्येष्ठकनिष्ठयोः अन्तः उदात्तः इति। यहाँ पर भी ज्येष्ठकनिष्ठयोः इस पद से ज्येष्ठ, कनिष्ठ इस शब्द स्वरूप का ही ग्रहण है, उन शब्दों के अर्थ का ग्रहण नहीं है। इस प्रकार यहाँ सूत्र का यह अर्थ प्राप्त होता है - अवस्था अर्थ में ज्येष्ठ कनिष्ठ शब्दों का अन्त उदात्त होता है।

उदाहरण- ज्येष्ठ आह चमसा। कनिष्ठ आह चमसा।

सूत्र अर्थ का समन्वय- ज्येष्ठ आह चमसा यह प्रयोग वेद में प्राप्त होता है। यहाँ ज्येष्ठ इस शब्द का प्रयोग अवस्था अर्थ में है। उसको यहाँ प्रकृत सूत्र से ज्येष्ठ शब्द के अन्त स्वर अकार को उदात्त होता है।

कनिष्ठ आह चमसा यह प्रयोग भी वेद में प्राप्त होता है। यहाँ भी कनिष्ठ शब्द का आयु अर्थ में प्रयोग है। और उसको प्रकृत सूत्र से यहाँ पर भी कनिष्ठ शब्द के अन्त्य स्वर अकार उदात्त होता है।

11.5 अथादिः प्राक् शकटेः

सूत्र का अर्थ- यह अधिकार सूत्र है। इसका अधिकार 'शकटिशकट्योरिति' तक जाएगा।

सूत्र का अवतरण- इस सूत्र से आरम्भ करके 'शकटिशकटयोरिति' सूत्र तक आदिः- इस पद के अधिकार के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- यह अधिकार सूत्र है। इसके द्वारा आदिः इस पद का अधिकार किया जाता है। अथ आदिः प्राक् शकटेः ये सूत्र में आये पदच्छेद हैं। चार पद वाले इस सूत्र में अथ यह अव्यय पद है, आदिः यह प्रथमा एकवचनान्त पद है, प्राक् यह भी प्रथमा एकवचनान्त पद है, और शकटेः यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। अधिक्रियते इस पद का यहाँ आक्षेप किया है। और इस प्रकार यहाँ पद का अन्वय होता है - अथ प्राक् शकटेः आदिः अधिक्रियते इति। उससे यह सूत्र अर्थ प्राप्त होता है - शकटिशकटयोरिति सूत्र से पहले तक आदिः इस पद का अधिकार जाएगा।

उदाहरण- न संख्यायाः इस सूत्र में प्रकृत सूत्र से विहित आदिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद का अधिकार होता है।

11.6 ह्रस्वान्तस्य स्त्रीविषयस्य

सूत्र का अर्थ- ह्रस्वान्त स्त्री विषय का आदि उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण- स्त्रीविषय के ह्रस्वान्त शब्द का आदि उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य द्वारा की गई है।

टिप्पणियाँ

सूत्र की व्याख्या- यह विधायक सूत्र है। इस सूत्र से ह्रस्वान्त स्त्रीविषय शब्दों का आदि स्वर उदात्त होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। और वहाँ पर ह्रस्वान्तस्य यह षष्ठी एकवचनान्त पद है, स्त्रीविषयस्य यह भी षष्ठी एकवचनान्त पद है। 'अथादिः प्राक् शकटेः इस अधिकार सूत्र से आदिः इस पद का यहाँ अधिकार है। 'फिषोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से यहाँ उदात्तः इस स्वर बोधक पद की अनुवृति आती है। उसका यहाँ पदों का अन्वय होता है - ह्रस्वान्तस्य स्त्रीविषयस्य आदिः उदात्तः इति। उससे यह सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है - स्त्री विषय ह्रस्वान्त का आदि अच् उदात्त होता है।

उदाहरण- बलिः। तनुः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- बलिः यह शब्द स्त्रीविषय है, और यह शब्द ह्रस्वान्त भी है। उसको प्रकृत सूत्र से उस बलि शब्द के आदि स्वर अकार को उदात्त करने का विधान है।

इसी प्रकार तनुः यहाँ पर भी तनु शब्द का स्त्रीविषय होने से और ह्रस्वान्त होने से प्रकृत सूत्र से उस शब्द का आदि स्वर अकार को उदात्त करने का विधान है।

11.7 तृणधान्यानां च द्वयषाम्।

सूत्र का अर्थ- दो अचों में यह अर्थ है। दो अचों वाले तृण और धान्य का आदि उदात्त होता है।

सूत्र की रचना - दो अचों वाले तृण और धान्य शब्दों का आदि उदात्त विधान के लिए आचार्य ने इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इससे दो अच् वाले विशिष्ट तृण और धान्य शब्दों का आदि स्वर उदात्त होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। और वहाँ पर तृण धान्यानाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त पद है, च यह अव्यय पद है, और द्वयषाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त पद है। 'अथादिः प्राक् शकटेः' इस सूत्र से यहाँ पर आदिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद का अधिकार है, और उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद 'फिषोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र से इसकी अनुवृति आती है। द्वयचां तृणधान्यानां इन पदों के विशेष्य रूप से शब्दानाम् इस षष्ठी बहुवचनान्त पद का यहाँ आक्षेप किया है। और यहाँ पदों का अन्वय इस प्रकार से है - द्वयचां तृणधान्यानां च शब्दानाम् आदिः उदात्तः इति। यहाँ तृणधान्य पद से उनका शब्द स्वरूप का ग्रहण नहीं है, अपितु उन दोनों का अर्थ ही ग्रहण किया है। और सूत्र का अर्थ है - दो अच् विशिष्ट तृण और धान्य वाचक शब्दों का आदि स्वर उदात्त होता है।

उदाहरण- कुशाः। काशाः। माषाः। तिलाः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- कुश-इस शब्द में दो अच् है। किन्तु यह कुश शब्द तृणवाची (घास का पर्यायवाची)। उसको इस प्रकृत सूत्र से उस कुश- शब्द का आदि स्वर उकार को उदात्त करने का नियम किया है।

इस प्रकार काश, इस शब्द में दो अच् है। लेकिन यहाँ प्रयुक्त काश शब्द-धान्य का द्योतक है। इसलिये इस प्रकृति सूत्र से उस काश शब्द के आदि वाले अच् (आकार का) उदात्त विधान होता है।

इसी प्रकार माषाः इस शब्द में दो अच् है। और यह माष- शब्द धान्यवाची (धान का पर्यायवाची)। उसको इस प्रकृत सूत्र से उस माष- शब्द का आदि स्वर आकार को उदात्त होता है।

तिलाः इस शब्द में भी दो अच् है। और यह तिल- शब्द धान्यवाची है। उसको इस प्रकृत सूत्र से तिल- शब्द के आदि में स्वर इकार को उदात्त होता है।

विशेष- यहाँ यह जानना चाहिए की तृण धान्य वाचक पद दो अच् वाले ही हो, अन्यथा यदि वे पद बहुत अचों वाले अथवा एक अच् वाला पद हो तो प्रकृत सूत्र से वहाँ उन शब्दों का आदि स्वर उदात्त नहीं होता है। वहाँ के लिए उदाहरण जैसे - गोधूमाः। यहाँ गोधूम यह शब्द तृण वाचक भी है, उस गोधूम शब्द का बहुत अच् विशिष्ट होने से प्रकृत सूत्र से गोधूम शब्द के आदि स्वर ओकार को उदात्त नहीं होता है।

और भी यहाँ पद यदि केवल दो अच् विशिष्ट ही होता, तृणवाचक अथवा धान्यवाचक नहीं है, तो वहाँ पर भी प्रकृत सूत्र से उस शब्द का आदि स्वर उदात्त नहीं होता है। वहाँ के लिए उदाहरण है, जैसे - आम्रः इति। यहाँ आम्र शब्द दो अच् विशिष्ट होने पर भी तृणवाचक और धान्यवाचक के अभाव से प्रकृत सूत्र से उस आम्र- शब्द का आदि स्वर आकार उदात्त नहीं होता है।

11.8 अक्षस्यादेवनस्य।

सूत्र का अर्थ- जुए अर्थ को छोड़कर अक्ष् शब्द आदि उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण- जुए अर्थ छोड़कर अक्ष् शब्द का आदि में उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य ने की है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधि सूत्र है। इससे अक्ष् शब्द का आदि स्वर उदात्त होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। वहाँ अक्षस्य यह षष्ठी एकवचनान्त पद है, अदेवनस्य यहाँ पर भी षष्ठी एकवचनान्त पद है। इस सूत्र में अथादिः प्राक्ः शकटेः इस सूत्र से आदिः इस प्रथमा ए वचनान्त पद का अधिकार आ रहा है, उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति फिषोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से आ रही है। यहाँ पदों का अन्वय है - अदेवनस्य अक्षस्य आदिः उदात्तः इति। यहाँ अदेवन-शब्द से उसका अर्थ ग्रहण किया है, अदेवन नाम द्यूत क्रिया को छोड़कर। और भी यहाँ अक्ष-शब्द से उस शब्द के स्वरूप का ही ग्रहण है। उसको प्रकृत सूत्र से विहित कार्य अदेवन अर्थ में वर्तमान अक्ष् शब्द को उदात होता है। उससे यह सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है - अदेवन अर्थ में अक्ष् शब्द का आदि स्वर उदात्त होता है।

उदाहरण- तेन नाक्षः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- तेन नाक्षः इस उदाहरण वाक्य में अक्ष्- शब्द का द्युत अर्थ को छोड़कर प्रयोग है, उसको प्रकृत सूत्र से उस अक्ष् शब्द का आदि स्वर आकार को उदात्त होता है।

टिप्पणियाँ

विशेष– यहाँ यह जानना चाहिए की प्रकृत सूत्र से अदेवन अर्थ में वर्तमान अक्ष् शब्द के आदि स्वर अकार को उदात्त होता है। द्युत अर्थ में वर्तमान अक्ष् शब्द को उदात नहीं होता है। इस कारण से ही 'अक्षैर्मा दीव्यः' इस उदाहरण में अक्ष् शब्द के आदि स्वर अकार को उदात्त नहीं होता है। क्योंकि यहाँ अक्ष् शब्द का द्युत अर्थ में प्रयोग किया है।

11.9 छन्दसि च।

सूत्र का अर्थ– वेद विषय में मकर–वरूढ–पारेवत–वितस्तेक्ष्वार्जि–द्राक्षा–कलोमा–काष्ठा–पेष्ठा–काशी और अन्य शब्दों का आदि और दूसरा स्वर विकल्प से उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरणम्– छन्द में मकर–वरूढ–पारेवत–वितस्तेक्ष्वार्जि–द्राक्षा–कलोमा–काष्ठा–पेष्ठा–काशी शब्दों का और अन्य शब्दों के आदि और दूसरा स्वर विकल्प से उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य ने की है।

सूत्र की व्याख्या– यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से मकर आदि शब्दों का और अन्य शब्दों का आदि व दूसरा स्वर विकल्प से उदात्त होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। इस सूत्र में छन्दसि यह विषय सप्तम्यन्त पद है, च यह अव्यय पद है। मकर–वरूढ–पारेवत–वितस्तेक्ष्वार्जि– द्राक्षा–कलोमा–काष्ठा–पेष्ठा–काशीनामादिर्वा इस सूत्र से यहाँ पर मकर–वरूढ–पारेवत–वितस्तेक्ष्वार्जि–द्राक्षा–कलोमा–काष्ठा–पेष्ठा–काशीनाम् ये षष्ठी बहुवचनान्त पद, आदिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद, और वा इस अव्यय पद की यहाँ अनुवृति आती है। 'अथ द्वितीयां प्रागीषात्' इस सूत्र से द्वितीयाम् इस पद का यहाँ अधिकार है। वह पद यहाँ प्रथमा एकवचनान्त से विपरीत है। अतादिः प्राक् शकटेः इस सूत्र से यहाँ आदिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद का यहाँ अधिकार है। फिषोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति है। च इस अव्यय पद से यहाँ अन्य शब्दों का भी ग्रहण होता है। इन सब पदों का यहाँ अन्वय है – छन्दसि मकर–वरूढ–पारेवत–वितस्तेक्ष्वार्जि–द्राक्षा–कलोमा–काष्ठा–पेष्ठा–काशीनां च आदिः द्वितीयः वा उदात्तः इति। उस सूत्र का यह अर्थ यहाँ प्राप्त होता है – वेद विषय में मकर–वरूढ–पारेवत–वितस्तेक्ष्वार्जि– द्राक्षा–कलोमा–काष्ठा–पेष्ठा–काशी और अन्य शब्दों का आदि और दूसरा स्वर विकल्प से उदात्त होता है।

उदाहरण– मकरः, वरूढः।

सूत्र अर्थ का समन्वय– मकरः यह प्रयोग वेद में देखा जाता है, अतः प्रकृत सूत्र से मकर शब्द का छन्द में प्रयोग होने से और मकरादिगण के अन्तर्गत होने से प्रकृत सूत्र से उस मकर शब्द का आदि स्वर उदात्त होता है।

इसी प्रकार वरूढः यह प्रयोग भी वेद में ही मिलता है, और इस वरूढ़ शब्द का मकरादिगण के अन्तर्गत पाठ होने से प्रकृत सूत्र से उस वरूढ शब्द का आदि स्वर उदात्त होता है। इसी प्रकार अन्य जगह भी पारेवत आदि शब्दों में भी जानना चाहिए।

विशेष–मकर–वरूढ–पारेवत–वितस्तेक्ष्वार्जि–द्राक्षा–कलोमा–काष्ठा–पेष्ठा–काशीनामादिर्वा इस सूत्र से ही यहाँ छन्द में मकर आदि शब्दों के आदि में और दूसरे स्वर का उदात्त होना सम्भव है।

फिर भी प्रकृत सूत्र से मकर आदि के साथ अन्य शब्दों का भी आदि और दूसरा स्वर उदात्त हो। इस कारण से ही इस प्रकृत सूत्र को अलग से बनाया है।

11.10 सुगन्धितेजनस्य ते वा।

सूत्र का अर्थ– सुगन्धितेजन और ते इस शब्द का आदि और दूसरा विकल्प से उदात्त हो।

सूत्र की रचना – सुगन्धितेजन का पहला और दूसरा स्वर, और ते शब्द के स्वर का विकल्प से उदात्त विधान के लिए इस सूत्र का सृजन किया है।

सूत्र की व्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में तीन पद है। वहाँ सुगन्धितेजनस्य यह षष्ठी एकवचनान्त पद है, ते यह षष्ठ्यन्त अनुकरण प्रथमा एकवचनान्त पद है, वा यह अव्यय पद है। अथ द्वितीयां प्रागीषात् इस सूत्र से द्वितीयाम् इस पद का अधिकार है। उस पद को यहाँ प्रथमा एकवचनान्त के द्वारा बदला गया। अतादिः प्राक् शकटेः इस सूत्र से यहाँ आदिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद का यहाँ अधिकार है। फिषोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृत्ति आ रही है। उसके पदों का यहाँ अन्वय होगा – सुगन्धितेजनस्य ते आदिः द्वितीयः वा उदात्तः इति। उस सूत्र का अर्थ है – सुगन्धितेजनस्य और ते– इस शब्द का आदि और दूसरा स्वर विकल्प से उदात्त होता है।

उदाहरण– सुगन्धितेजनाः।

सूत्र का अवतरणम्– प्रकृत सूत्र से ही सुगन्धितेजन शब्द के आदि उकार का और दूसरे अकार स्वर का विकल्प से उदात विधान किया। इसी प्रकार ते यहाँ पर भी प्रकृत सूत्र से विकल्प से उदात्त है।

पाठगत प्रश्न 11.1

1. फिट् नाम क्या है?
2. दक्षिण का आदि और अन्त किस सूत्र से उदात्त होता है?
3. 'घृतादीनां च' इस सूत्र से क्या होता है?
4. अवस्था अर्थ में ज्येष्ठ, कनिष्ठ शब्दों के अन्त्य स्वर को उदात्त किस सूत्र से होता है?
5. 'अथादिः प्राक् शकटेः' इस सूत्र से किस पद का अधिकार ग्रहण करते हैं?
6. आम्रः यहाँ पर 'तृणधान्यानां च द्वयषाम्' इस सूत्र से आद्युदात्त कैसे नहीं हुआ?
7. द्युत अर्थ को छोड़कर अक्ष् शब्द का आदि उदात्त किस सूत्र से होता है?
8. सुगन्धितेजन शब्द का पर्याय से उदात्त स्वर किस सूत्र से होता है?

टिप्पणियाँ

11.11 शकटिशकट्योरक्षरमक्षरं पर्यायेण।

सूत्र का अर्थ– शकटि शकटी शब्दों का प्रत्येक अक्षर क्रम से उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण– शकटि शकटी शब्दों के स्वरों को पर्याय से उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य जी ने की है।

सूत्र की व्याख्या– यह सूत्र विधायक सूत्र है। इससे क्रम से उदात्त स्वर का विधान है। शकटिशकट्योः अक्षरम् अक्षरं पर्यायेण ये सूत्र में आये पदच्छेद हैं। चार पद वाले इस सूत्र में शकटिशकट्योः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद है, अक्षरम्, और अक्षरं ये दोनों पद प्रथमा एकवचनान्त है, और पर्यायेण यह तृतीया एकवचनान्त पद है। फिषोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से यहाँ उदात्तः इस विधेय स्वर बोध क प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आ रही है। उससे यहाँ सूत्र के पदों का अन्वय होता है – शकटिशकट्योः अक्षरम् अक्षरं पर्यायेण उदात्तः इति। यहाँ शकटिशकट्योः इस पद के विशेष्य रूप से शब्दयोः इस पद का यहाँ आक्षेप किया है। उससे यहाँ सूत्र का अर्थ होता है – शकटि शकटी शब्दों के अक्षर – अक्षर को क्रम से उदात्त होता है।

उदाहरण – शकटी। शकटिः।

सूत्र अर्थ का समन्वय– शकटी इस पद में प्रत्येक स्वर उदात्त है। अथ प्रकृत सूत्र से ही यहाँ अपने अपने क्रम से स्वर उदात्त होते हैं। इसी प्रकार शकटिः यहाँ पर भी प्रकृत सूत्र से ही क्रम से स्वर वर्ण उदात्त होते हैं।

विशेष– 'अथादिः प्राक् शकटेः' इस अधिकार सूत्र में प्राक् शकटेः इस वचन से उस सूत्र से नियम किये गए आदिः इस पद का अधिकार प्रकृत सूत्र से पूर्व तक ही है। इस कारण से ही यहाँ क्रम से शकटि शकटी शब्दों के स्वर उदात्त होते हैं।

11.12 गोष्ठजस्य ब्राह्मणनामधेयस्य।

सूत्र का अर्थ– अक्षर अक्षर को क्रम से उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण– ब्राह्मण नामधेय गोष्ठज शब्द के स्वरों को क्रम से उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य जी ने की है।

सूत्र की व्याख्या– यह विधिसूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। यहाँ दो पद है। गोष्ठज शब्द का और ब्राह्मणनामधेयस्य ये सूत्र में आये पदच्छेद हैं। वहाँ गोष्ठजस्य शब्द षष्ठी एकवचनान्त पद है, ब्राह्मणनामधेयस्य यह भी षष्ठी एकवचनान्त पद है। शकटिशकट्योरक्षरमक्षरं पर्यायेण इस सूत्र से अक्षरम्, अक्षरं इन प्रथमा एकवचनान्त दो पदों की, पर्यायेण इस तृतीया एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आ रही है। उससे इस सूत्र के पदों का अन्वय है– गोष्ठजशब्दस्य ब्राह्मणनामधेयस्य अक्षरमक्षरं पर्यायेण उदात्तः इति। प्रकृत सूत्र से विहित कार्य गोष्ठज इस शब्द स्वरूप को होता है। किन्तु प्रकृत सूत्र से विहित कार्य तभी सम्भव है, जब गोष्ठज शब्द किसी भी ब्राह्मण

का नाम है। इसलिए सूत्र में ब्राह्मणनामधेयस्य इस पद को जोड़ा गया है। इस प्रकार यहाँ यह सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है – ब्राह्मण नामधेय गोष्ठज शब्द का प्रत्येक स्वर क्रम से उदात्त होता है।

उदाहरण– गोष्ठजो ब्राह्मणः।

सूत्र अर्थ का समन्वय– गोष्ठजो ब्राह्मणः यहाँ पर गोष्ठज यह शब्द किसी ब्राह्मण का नाम है। अतः प्रकृत सूत्र से उस गोष्ठज शब्द के स्वर वर्णों को क्रम से उदात्त होने का विधान है।

विशेष– यहाँ यह समझना चाहिए की यह गोष्ठज शब्द ब्राह्मण का नाम है। अन्यथा वहाँ प्रकृत सूत्र से उदात्त होने का विधान नहीं है। इसलिए गोष्ठजः पशुः इत्यादि में गोष्ठज शब्द का ब्राह्मण नामधेय के अभाव होने से प्रकृत सूत्र से वहाँ स्वर उदात्त नहीं होते है। और वहाँ कृत्त उत्तर पद से प्रकृति स्वर अन्तोदात्त होता है।

11.13 निपाता आद्युदात्ताः।

सूत्र का अर्थ– निपात आद्युदात्त होते हैं।

सूत्र का अवतरण– निपात संज्ञक के आदि स्वरों को उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या– छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद हैं, वहाँ निपाताः यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है, आद्युदात्ताः यह भी प्रथमा बहुवचनान्त पद है। यहाँ निपात यह संज्ञाबोधक पद है। च, वा, ह, अह, एव, एवम्, नूनम्, शश्वत्, युगपत्, भूयस्, कूपत्, कुवित्, नेत्, चेत्, चणकच्चित्, यत्र, नह, हन्त, माकिः, माकिम्, नकिः नकिम्, माङ्, नञ्, यावत्, तावत्, त्वै, द्वै, न्वै, रै, श्रौषट्, वौषट्, स्वाहा, स्वधा, वषट्, तुम्, तथाहि, खलु, किल, अथो, अथ, सुष्ठु, स्म, आदह – इत्यादि निपात संज्ञक है।

वैसे ही पाणिनीय शास्त्र में निपात यह संज्ञा बोधक पद है। वहाँ निपात संज्ञा का विधान करने वाले अनेक सूत्र हैं। जैसे – चादयोऽसत्त्वे, प्रादयः इत्यादि। उनमें अद्रव्य वाचि शब्द और जो चादिगण में पढ़े हुए है, उनका 'चादयोऽसत्त्वे' इस सूत्र से निपातसंज्ञा का विधान है। अद्रव्यवाचि प्रादिगण में पढ़े हुए होने से उन शब्दों को 'प्रादयः' इस सूत्र से निपात संज्ञा होती है। इसी प्रकार यहाँ पदों का अन्वय निपाताः आद्युदात्ताः इति। उससे यह सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है – निपात आद्युदात्त होते हैं।

उदाहरण– स्वाहा।

सूत्र अर्थ का समन्वय– स्वाहा इसका 'चादयोऽसत्त्वे' इस सूत्र से निपात संज्ञा है। अतः उसका निपात होने से प्रकृत सूत्र से 'स्वाहा' इसका आदि आकार को उदात्त होने का नियम है। इसी प्रकार स्वधा, वषट्, पम्, तथाहि इत्यादि निपातो के आदि स्वरों को उदात्त करने का विधान है।

टिप्पणियाँ

विशेष- प्रकृत सूत्र में छन्दसि इस पद की अनुवृति नहीं आ रही है, आद्युदात्तश्च यह भाष्यकार द्वारा कहे गए प्रमाण से। उनको प्रकृत सूत्र से बताये गए कार्य लोक में भी होते है, और वेद में भी होते हैं।

11.14 उपसर्गश्चाभिवर्जम्।

सूत्र का अर्थ- अभि शब्द को छोड़कर उपसर्ग आद्युदात्त होते है।

सूत्र का अवतरण- अभि को त्यागकर उपसर्गों के आदि स्वरों को उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य जी द्वारा की गई है।

सूत्र की व्याख्या- यह सूत्र विधिसूत्र है। इससे अभि से शेष सभी उपसर्गों को आद्युदात्त का विधान है। यहाँ तीन पद है, उपसर्गः च अभिवर्जम् ये सूत्र में आये पदच्छेद हैं। वहाँ उपसर्गः यह प्रथमा एकवचनान्त पद है, च यह अव्यय, अभिवर्जम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। इस सूत्र में आदिः, उदात्तः इन प्रथमा एकवचनान्त दो पदों की अनुवृति आ रही है। इस प्रकार वहाँ पदों का अन्वय होता है - अभिवर्जम् उपसर्गाः च आदिः उदात्तः इति। यहाँ आदिः और उदात्तः इन दो पदों को आद्युदात्ताः इस रूप के द्वारा उपसर्गाः इस पद के साथ अन्वय किया है। प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर् दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप - ये प्रादयः है। उसका यहाँ सूत्र अर्थ होता है - अभि इस उपसर्ग को छोड़कर अन्य उपसर्ग आद्युदात्त हो।

उदाहरण- उदुत्तमं वरुण।

सूत्र अर्थ का समन्वय- उद्वतः यहाँ पर उत् यह उपसर्ग संज्ञक है। अतः प्रकृत सूत्र से यहाँ उत् इसके स्वर को प्रकृत सूत्र से उदात्त करने का विधान है। यहाँ यदि अभि यह उपसर्ग हो तो प्रकृत सूत्र से वहाँ उस अभि उपसर्ग को आदि उदात्त नहीं होता है। वहाँ के लिए उदाहरण है जैसे - अभ्यभिहि, अभराममस्थानम् इत्यादि।

पूर्व सूत्र से निपात आद्युदात्त सिद्ध होते है, इसी प्रकार यहाँ उप आदि उपसर्गों का आद्युदात्त सिद्ध होता है, फिर भी यहाँ अलग से इस सूत्र का विधान क्यों किया है? इस प्रश्न के होने पर कहते है की पूर्व सूत्र से ही उप् आदि उपसर्गो को आद्युदात्त होना सम्भव है, फिर भी उपसर्गो में अभि इस उपसर्ग को आद्युदात्त नहीं हो जाए इसलिए इस सूत्र को अलग पढ़ा गया है।

11.15 एवादीनामन्तः।

सूत्र का अर्थ- एव आदि अन्तोदात्त हो।

सूत्र का अवतरण- एव आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से एव आदि शब्दों का अन्त उदात्त होता है। एव आदीनाम् अन्तः ये सूत्र में आये पदच्छेद हैं। वहाँ एवादीनाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त पद है, अन्तः यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। निपाता आद्युदात्ताः इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आ रही है। उससे यहाँ पदों का अन्वय होता है - एवादीनाम् अन्तः उदात्तः इति। एव, एवम्, नूनम्, शश्वत्, युगपत्, भूयस्, कूपत्, कुवित्, नेत्, चेत्, चणकच्चित्, यत्र, नह, हन्त, माकिः, माकिम्, नकिः नकिम्, माङ्, नञ्, यावत्, तावत्, त्वै, द्वै, न्वै, रै, श्रौषट्, वौषट्, स्वाहा, स्वधा, वषट्, तुम्, तथाहि, खलु, किल, अथो, अथ, सुष्ठु, स्म, आदह इत्यादि एवादयः है। उससे यहाँ सूत्र का अर्थ होता है - एव आदि का अन्त उदात्त होता है।

और एवमादीनामन्तः यह इस सूत्र का पाठान्तर है। उस पक्ष में एवम् यह अव्यय पद है, आदीनाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त पद है, अन्तः यह प्रमा एकवचनान्त पद है। यहाँ पर भी उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की पूर्व सूत्र से अनुवृत्ति आ रही है। उससे यहाँ पदों का अन्वय है - एवम् आदीनाम् अन्तः उदात्तः इति। और उससे यहाँ सूत्र का अर्थ होता है - एवम् इत्यादि शब्दों का अन्त उदात्त होता है।

उदाहरण- सहं ते पुत्र सूरिभिः, एव, एवम्, नूनम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- आलोचित सूत्र में एव इत्यादि शब्द एव आदि के अन्तर्गत होते है, अतः प्रकृत सूत्र से एव इसका अन्त स्वर उदात्त होता है।

सहं ते पुत्र सूरिभिः इत्यादि में सह यह अन्तोदात्त होने से यहाँ पढ़ा गया है। परन्तु छठें अध्याय के तीसरे पाद में ही 'सहस्य सः' इस सूत्र में सह शब्द आद्युदात्त पढ़ा गया है। अतः इस पर विचार करना चाहिए।

11.16 वाचादीनामुभावुदात्तौ।

सूत्र का अर्थ- (वाच्- इत्यादि शब्दों के दोनों वर्ण ही उदात्त हो)।

सूत्र का अवतरण- वाच् आदि शब्दों के दोनों वर्णों के उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य जी द्वारा की गई है।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से वाच आदि शब्दों के दोनों वर्ण उदात्त हो।

इस सूत्र में वाचादीनाम् उभौ उदात्तौ ये सूत्र में आये पदच्छेद हैं। और यहाँ वाचादीनाम् षष्ठी बहुवचनान्त पद है, उभौ यह प्रथमा द्विवचनान्त पद है, उदात्तौ यह भी प्रथमा द्विवचनान्त पद है। यहाँ इस सूत्र के पदों का अन्वय इस प्रकार है - वाचादीनाम् उभौ उदात्तौ इति। और उससे यह सूत्र का अर्थ यहाँ प्राप्त होता है - वाच् आदि शब्दों के दोनों वर्ण उदात्त होते हैं।

उदाहरण- वाचौ।

टिप्पणियाँ

सूत्र अर्थ का समन्वय- वाचौ यह वाच्-शब्द के प्रथमा द्विवचन में रूप है। अतः प्रकृत सूत्र से वाच्-शब्द से प्रथमा द्विवचन में सिद्ध वाचौ इस शब्द के दोनों ही स्वर उदात्त होते हैं। इसी प्रकार वाचादि गण में पढ़े हुए अन्य शब्दों के अन्य भी रूपों के यहाँ उदाहरण हैं।

यहाँ 'अनुदात्तं पदमेकवर्जम्' इस सूत्र से प्राप्त अनुदात्त स्वर के निषेध के लिए इस सूत्र में उभौ इस पद का ग्रहण किया है।

11.17 चादयोऽनुदात्ताः।

सूत्र का अर्थ- चादय निपात अनुदात्त हो।

सूत्र का अवतरण- यहाँ च आदि में 'निपातानाम् आद्युदात्ताः' इस सूत्र से प्राप्त आद्युदात्त के निषेध के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य जी ने की है।

सूत्र की व्याख्या- संज्ञा-परिभाषा-विधि-नियम, अतिदेश, अधिकार सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे अनुदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद हैं, चादयः अनुदात्ताः इति। निपाताः इस प्रथमा बहुवचनान्त पद की तो उस पूर्व सूत्र से ही यहाँ अनुवृति आ रही है। और उससे यहाँ सूत्र के पदों का अन्वय इस प्रकार है - चादयः निपाताः अनुदात्ताः इति। च, वा, ह, अह, एव, एवम्, नूनम्, शश्वत्, युगपत्, भूयस्, कूपत्, कुवित्, नेत्, चेत्, चणकच्चित्, यत्र, नह, हन्त, माकिः, माकिम्, नकिः नकिम्, माङ्, नञ्, यावत्, तावत्, त्वै, द्वै, न्वै, रै, श्रौषट्, वौषट्, स्वाहा, स्वधा, वषट्, तुम्, तथाहि, खलु, किल, अथो, अथ, सुष्ठु, स्म, आदह इत्यादि चादय हैं। और यह चादिगण आकृतिगण है। उससे यह सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है - चादय निपात संज्ञक अनुदात्त हो।

उदाहरण - उत त्वः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- उत यह निपात संज्ञक शब्द है। और उसका चादिगण में पाठ है। अतः प्रकृत सूत्र से चादिगण में पढ़े हुए उत इस निपात के आदि में उकार को अनुदात्त करने का विधान है। एवं वा, ह, अह, एव, एवम्, नूनम्, शाश्वत्, युगपत्, भूयस् - इत्यादि में भी इस सूत्र के उदाहरण जानने चाहिए।

11.18 यथेति पदान्ते।

सूत्र का अर्थ- (पाद के अन्त में यथा यह अनुदात्त होता है)।

सूत्र का अवतरण- पाद के अन्त में यथा को अनुदात्त स्वर विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- संज्ञा-परिभाषा-विधि-नियम अतिदेश अधिकार सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे अनुदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में यथा, इति, पादान्ते ये पदच्छेद है। तीन पद वाले इस सूत्र में यथा यह अव्यय पद है, इति यह भी अव्यय पद है, और पादान्ते यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। पूर्वसूत्र से 'चादयोऽनुदात्ताः' इस सूत्र से अनुदात्ताः इस प्रथमा बहुवचनान्त पद की प्रकृत

सूत्र में अनुवृति आ रही है। उन पदों का अन्वय होता है – पादान्ते यथा इति अनुदात्तः इति। इस प्रकार यहाँ सूत्र का अर्थ इस प्रकार सिद्ध होता है – पाद के अन्त में यथा यह अनुदात्त होता है।

उदाहरण– तन्नेमिमृभवो यथा।

सूत्र अर्थ का समन्वय– तन्नेमिमृभवोध् यथा – इस उदाहरण में अनुष्टुप्– छन्द है। और यहाँ यथा यह शब्द पाद के अन्त में है। अतः प्रकृत सूत्र से यथा के अन्त्य आकार को अनुदात्त करने का विधान है।

11.19 प्रकारादिद्विरुक्तौ परस्यान्त उदात्तः।

सूत्र का अर्थ– दो बार कहा गया प्रकार आदि शब्दों के पर का अन्त उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण– प्रकार आदि शब्दों के दो बार कहने पर वहाँ दूसरे प्रकार आदि शब्द के अन्त स्वर को उदात्त होने का विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य जी ने की है।

सूत्र की व्याख्या– संज्ञा–परिभाषा–विधि–नियम अतिदेश अधिकार सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में पांच पद है। वहाँ प्रकार आदि इस प्रथमा एकवचनान्त पद है, द्विरुक्तौ यह सप्तमी एकवचनान्त पद है, परस्य यह षष्ठी एकवचनान्त पद है, अन्तः यह प्रथमा एकवचनान्त पद है, और उदात्तः यह भी प्रथमा एकवचनान्त पद है। और सूत्र के पदों का अन्वय होता है – प्रकारादिद्विरुक्तौ परस्य अन्तः उदात्तः इति। इस प्रकार यहाँ यह सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है – प्रकार आदि शब्दों के दो बार होने पर वहाँ दूसरे प्रकार आदि में अन्त का अच् उदात्त स्वर होता है।

उदाहरण– पटुपटुः।

सूत्र अर्थ का समन्वय– यह पटु– शब्द प्रकार आदिगण में पढ़ा गया है। अतः पटुपटुः इस उदाहरण में प्रकार आदिगण में पढ़े हुए पटु शब्द के 'प्रकारे गुणवचनस्य' इस सूत्र से दो होने पर पटु पटु इस स्थित्ति में प्रकृत सूत्र से दूसरे पटु शब्द का अन्त्य उकार को उदात्त होता है। और विभक्ति कार्य करने पर पटुपटुः यह रूप सिद्ध होता है।

विशेष– और इस प्रकृत सूत्र से विहित कार्य को 'कर्मधारयवदुत्तरेषु' यहाँ कर्मधारयवद् भाव होने से सिद्ध है, उससे यह सूत्र व्यर्थ है यह शङ्का यहाँ नहीं करना चाहिए। क्योकि यह प्रकृत सूत्र पाणिनीय सूत्र से पूर्व से ही वर्तमान है। अतः इसका पाणिनीय से पूर्व प्रवृत होने से कोई दोष नहीं है। अतः आचार्य जी कहते हैं की यह सूत्र कर्मधारयवद भाव से सिद्ध अन्तोदात्त का अनुवाद किया है।

11.20 शेषं सर्वमनुदात्तम्।

सूत्र का अर्थ– शेष नित्य आदि के दो बार होने पर बाद अर्थ में है।

टिप्पणियाँ

सूत्र का अवतरण- प्रकार आदि शब्दों के द्वित्व होने से सभी को अनुदात्त स्वर विधान के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य जी ने की है।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे अनुदात्त स्वर का विधान है। शेषं सर्वम् अनुदात्तम् ये सूत्र में आये पदच्छेद है। शेषम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है, सर्वम्, अनुदात्तं ये दो पद भी प्रथमा एकवचनान्त है। कहे हुए से अन्य शेष है। यहाँ शेष क्या है? इस जिज्ञासा में कहते है, शेष प्रकार आदि के द्वित्व होने से अन्य। अर्थात् प्रकार आदि द्वित्व होने पर पर का अन्त उदात्त है, इस सूत्र में प्रकार आदि शब्दों को द्वित्व कहा है, उससे अन्य द्वित्व होने पर यहाँ शेष पद वाच्य है। इस प्रकार यहाँ पदों का अन्वय इस प्रकार है - शेषं सर्वम् अनुदात्तम् इति। उससे यहाँ यह सूत्र अर्थ यहाँ पास होता है - प्रकार आदि- शब्दों के द्वित्व होने से अन्य द्वित्व में पर के सभी अनुदात्त हो।

उदाहरण- प्रप्राघ्यम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- प्रप्रायम् इस उदाहरण में प्र इस शब्द के द्वित्व होता है। और भी प्र यह शब्द प्रकार आदि से भिन्न है। अत: उस शब्द के द्वित्व होने पर 'प्र प्र' इस स्थित्ति में परे का प्र इस शब्द का अकार को प्रकृत सूत्र से अनुदात्त होने का विधान है।

पाठगत प्रश्न 11.2

1. 'शकटिशकट्योरक्षरमक्षरं पर्यायेण' इस सूत्र से कौन से स्वर का विधान है?
2. ब्राह्मण नामधेय गोष्ठज शब्द का अक्षर-अक्षर क्रम से उदात्त किस सूत्र से होता है?
3. निपात आद्युदात्त किस सूत्र से है?
4. किस उपसर्ग को छोड़कर अन्य सभी उपसर्गो को आद्युदात्त होने का विधान है?
5. एव आदि अन्तोदात्त किस सूत्र से होती है?
6. चादिगण: आकृतिगण है, अथवा नहीं ?
7. द्वित्व होने पर प्रकार आदि शब्दों के पर का अन्त उदात्त किस सूत्र से होता है?

पाठ का सार

प्रातिपदिक को फिट् प्राचीन आचार्यो के द्वारा कहा गया है। फिट् यह संज्ञा वाचक पद है। और यह संज्ञा महर्षि पाणिनी से पूर्वकाल से ही वर्तमान है। ये सूत्र फिषम् अर्थात् प्रातिपदिक के आश्रित ही है। फिट्-स्वरों के विषय में यह पाठ है। छन्दसि च, घृतादीनां च, जेष्ठकनिष्ठयोर्वयसि, तृणधान्यानां च द्रव्यषाम् इत्यादि सूत्र से फिट्-स्वर का प्रतिपादन किया है। इस पाठ में फिट्-स्वर

विधायक कुछ विशेष सूत्र की आलोचना है। क्योकि पाठ के बढ़ने के भय से प्रसिद्ध ही सूत्रों को ही यहाँ हमारे द्वारा स्वीकार किया है। जैसे - फिषोन्तः उदात्तः इस सूत्र से फिषः अथवा प्रातिपदिक के अन्त्य को उदात्त करने का नियम किया है। उच्चैः इस पद की पाणिनीय सूत्रों के द्वारा प्रातिपदिक संज्ञा नहीं है, अपितु पूर्व आचार्यों के द्वारा प्रातिपदिक कहा जाता है। अतः उस फिषः अथवा प्रातिपदिक उच्चै इसके अन्त्य ऐकार को प्रकृत सूत्र से उदात्त होता है। और भी छन्दसि च इस सूत्र से दक्षिण शब्द का आदि और अन्त उदात्त होता है। दक्षिण यह वैदिक प्रयोग है। अतः प्रकृत सूत्र से उस दक्षिण शब्द के अन्त अकार का और आदि में अकार के उदात्त होने का विधान है। इसी प्रकार 'घृतादीनां च' इस सूत्र से घृतादि शब्दों के अन्त्य स्वर को उदात्त होता है। इसी प्रकार ज्येष्ठकनिष्ठयोर्वयसि इस सूत्र से अवस्था अर्थ में ज्येष्ठ कनिष्ठ शब्दों के अन्त्य स्वर को उदात्त होता है। और फिर 'तृणधान्यानां च द्वयषाम्' इस सूत्र से दो अच् वाले तृण धान्य वाचक शब्दों के आदि स्वर के उदात्त होने का विधान है। कुश इस शब्द में दो अच् है। और यह कुश शब्द तृणवाची है। उससे इस प्रकृत सूत्र से उस कुश-शब्द के आदि स्वर उकार का उदात्त होने का विधान किया है। इसी प्रकार काशाः इस शब्द में दो अच् है। और यह काश-शब्द धान्यवाची है। उससे इस प्रकृत सूत्र से उस काश-शब्द के आदि स्वर का आकार उदात्त होने का विधान है। इसी प्रकार अन्य फिट्-स्वर विधायक सूत्रों का भी वर्णन है। इस पाठ में उन सूत्रों के व्याख्यान है, उदाहरण, और उदाहरण सङ्गति का यहाँ प्रदर्शन किया है।

पाठांत प्रश्न

1. 'फिषोऽन्त उदात्तः' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. 'छन्दसि च' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. 'ज्येष्ठकनिष्ठयोर्वयसि' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. 'तृणधान्यानां च द्वयषाम्' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. 'गोष्ठजस्य ब्राह्मणनामधेयस्य' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
6. 'एवादीनामन्तः' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
7. 'चादयोऽनुदात्ताः' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1

1. प्रातिपदिक।
2. छन्दसि च सूत्र से।

3. घृत आदि शब्दों का अन्त्य स्वर उदात्त होता है।
4. 'ज्येष्ठकनिष्ठयोर्वयसि' इस सूत्र से।
5. आदिः इस पद का।
6. तृणवाचक के अभाव होने से और धान्य वाचक के अभाव होने से।
7. अक्षस्यादेवनस्य इस सूत्र से।
8. सुगन्धितेजनस्य ते वा इस सूत्र से।

11.2

1. उदात्त स्वर।
2. गोष्ठजस्य ब्राह्मणनामधेयस्य इस सूत्र से।
3. निपाता आद्युदात्ताः इस सूत्र से।
4. अभि- इस उपसर्ग को छोड़कर।
5. एवादीनामन्तः इस सूत्र से।
6. हाँ, आकृतिगण है।
7. प्रकारादिद्विरुक्तौ परस्यान्त उदात्तः इस सूत्र से।

॥ ग्यारहवां पाठ समाप्त॥